उसने हमें पवित्रशास्त्र दिया: व्याख्या की नींव

अध्ययन मार्गदर्शिका

अध्याय दो:

व्याख्या की तैयारी करना

विषय-वस्तु सूची

इस अध्याय और मार्गदर्शिका का उपयोग कैसे करें..... 3

नोट्स 3

I. **परिचय** (0:19) 4

II. **पवित्र आत्मा पर निर्भरता** (1:19) 4
- क. प्रेरणा (3:22) 4
  - 1. दिव्य स्रोत (11:47) 5
  - 2. मानवीय तरीके (20:24) 6
- ख. प्रबोधन (23:17) 7

III. **मानवीय प्रयासों की आवश्यकता** (28:20) 7
- क. महत्व (28:32) 7
- ख. प्रभाव (33:58) 8
  - 1. श्रुतिभाव्य अर्थ निरूपण (35:03) 8
  - 2. परस्पर व्यवहार (36:39) 8
  - 3. अनुभव (38:28) 9

IV. **सारांश** (42:23) 9

पुनर्विचार हेतु प्रश्न..... 10

लागू करने हेतु प्रश्न..... 13

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

इस अध्याय और मार्गदर्शिका का उपयोग कैसे करें

इस अध्ययन मार्गदर्शिका को सम्बद्ध वीडियो अर्थात् चलित दृश्य अध्यायों के साथ संयुक्त रूप में उपयोग करने के लिए निर्मित किया गया है। यदि आपके पास वीडियो उपलब्ध नहीं हैं, तो यह अध्ययन मार्गदर्शिका ऑडियो अर्थात् श्रव्य अध्याय और/या अध्याय की मूल प्रतियों के संस्करणों के साथ कार्य करने के लिए भी सहायता देंगे। इसके अतिरिक्त, अध्याय और मार्गदर्शिका की मंशा एक सीखने वाले समुदाय के उपयोग के लिए की गई है, परन्तु साथ ही इनका उपयोग यदि आवश्यक है तो व्यक्तिगत् अध्ययन के लिए भी किया जा सकता है।

- **इससे पहले कि आप अध्याय को देखें**
    - **स्वयं को तैयार करें** – किसी भी अनुशंसित अध्यायों को पढ़ कर पूरा कर लें।
    - **देखने के लिए समय निर्धारित करें** – इस मार्गदर्शिका के नोट्स खण्ड में, अध्याय को उन भागों में विभाजित किया गया है जो कि वीडियो के साथ सम्बद्ध हैं। प्रत्येक मुख्य भाग के साथ दिए हुए लघुकोष्ठकों में दिए हुए समय कोड्स का उपयोग, यह निर्धारित करता है कहाँ से अध्याय देखना आरम्भ किया जाए और कहाँ देखना समाप्त होता है। थर्ड मिलेनियम के अध्याय सघनता से सूचनाओं के साथ भरे हुए हैं, इसलिए हो सकता है कि आप इसे कई टुकड़ों में देखना चाहेंगे। इन टुकड़ों को मुख्य भागों के अनुसार होना चाहिए ।
- **जब आप अध्याय को देख रहे हैं तब**
    - नोट्स बनाएं — अध्ययन मार्गदर्शिका के नोट्स खण्ड अध्याय की मूल रूपरेखा की जानकारी रखते हैं, जिसमें प्रत्येक खण्ड को आरम्भ किए जाने के लिए समय कोड्स और कुँजी नोट्स सम्मिलित हैं जो कि आपका मार्गदर्शन इन सूचनाओं के लिए करेंगे। अधिकांश मुख्य विचारों को पहले से ही सारांशित कर दिया गया है, परन्तु इन्हें स्वयं के नोट्स के द्वारा पूरक किया जाना सुनिश्चित करें। आपको समर्थन देने वाली अतिरिक्त सामग्री को भी जोड़ना चाहिए जो आपको मुख्य विचारों को स्मरण करने, विवरण देने से और इनका बचाव करने में सहायता प्रदान करेंगे।
    - **टिप्पणियों और प्रश्नों को लिख लें** – जब आप वीडियो को देखते हैं, तब हो सकता है कि जो कुछ आप सीख रहे हैं उसके प्रति आपके पास टिप्पणियाँ और/या प्रश्न हों। अपनी टिप्पणियों और प्रश्नों को हाशिये में लिखें ताकि इन्हें आप अध्याय को देखने के पश्चात् समूह के साथ साझा कर सकते हैं।
    - **अध्याय के भागों को देखते समय लघु ठहराव/पुन: आरम्भ बटन का उपयोग करें –** आप पाएंगे कि कुछ निश्चित स्थानों पर पुनर्विचार के लिए कठिन अवधारणाएँ, या रूचिपूर्ण बातों पर विचार विमर्श या अतिरिक्त नोट्स लिखने के लिए वीडियो का लघु ठहराव या इसे पुन: आरम्भ करना सहायतापूर्ण है।
- **आपके द्वारा अध्याय को देख लेने के पश्चात्**
    - **पुनर्विचार के लिए प्रश्नों को पूरा करें** – पुनर्विचार के लिए प्रश्न अध्याय की मूल विषय-वस्तु के ऊपर आधारित है। आपको उपलब्ध किए हुए स्थान में पुनर्विचार के प्रश्नों के उत्तर को देना चाहिए। इन प्रश्नों को एक समूह की अपेक्षा व्यक्तिगत् रूप से पूरा किया जाना चाहिए।
    - **उपयोग के लिए प्रश्नों का उत्तर दें/विचार विमर्श करें** – उपयोग हेतु प्रश्न ऐसे प्रश्न हैं जो कि इस अध्याय की विषय-वस्तु के साथ सम्बद्ध होते हुए मसीही जीवन यापन, धर्मविज्ञान और सेवकाई से सम्बधित हैं। उपयोग हेतु प्रश्न लिखित गृहकार्यों या समूह के विचार विमर्श के लिए विषयों के लिए उपयुक्त हैं। क्योंकि लिखित गृहकार्यों के लिए, यह अनुशंसा की जाती है कि उत्तर एक पृष्ठ से अधिक लम्बा नहीं होना चाहिए।

© 2013 थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ के द्वारा
www.thirdmill.org

नोट्स

I. परिचय (0:19)

II. पवित्र आत्मा पर निर्भरता (1:19)

बाइबल की व्याख्या के साथ सामान्य तौर पर ऐसा व्यवहार किया जाता है कि मानो यह एक अव्यक्तिक घटना हो।

व्याख्याशास्त्र में मानवीय व्याख्याकारों और पवित्र आत्मा के मध्य में आपसी वार्तालाप सम्मिलित है।

क. प्रेरणा (3:22)

परिभाषा : पवित्र आत्मा ने मानवीय प्राणियों को परमेश्वर का प्रकाशन जैसे पवित्रशास्त्र लिखने के लिए उभारा और उनके कार्य का इस तरीके से निरीक्षण किया कि उनके लेख अचूक बन गए।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

प्रेरणा के तीन दृष्टिकोण :

- छायावादी : पवित्रशास्त्र परमेश्वर का अचूक सत्य नहीं है, परन्तु इसमें केवल मानवीय लेखकों के व्यक्तिगत् चिन्तन और विचार थे।

- यांत्रिक : पवित्र आत्मा ने अनिवार्य रूप से श्रुतिलेखन के माध्यम से बाइबल को लिखने का कार्य करवाया और लेखकों ने जो कुछ कहा गया था उसे लेखबद्ध कर लिया।

- जैविक : पवित्र आत्मा ने मानवीय लेखकों के व्यक्तित्व, अनुभवों, दृष्टिकोणों और अभिप्रायों का प्रयोग किया जब वह उनके द्वारा लिखे जाने का निरीक्षण कर रहा था।

1. दिव्य स्रोत (11:47)

पवित्र आत्मा को बाइबल के अर्थ और जिस तरीके से इस अर्थ को सम्प्रेषित किया जाता है का अन्तरंग ज्ञान है।

पवित्रशास्त्र के दिव्य स्रोत होने का एक सबसे महत्वपूर्ण निहितार्थ बाइबल का निर्विवाद तौर पर सत्यवादी स्वरूप होना है।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

पवित्रशास्त्र में पाए जाने वाले आभासित विरोधाभासों के निपटारे के लिए व्याख्याकारों के तरीके :

- आलोचनात्मक व्याख्याकार : आत्मा की अधिकारिक प्रेरणा को अस्वीकार करते हैं और अपनी स्वयं की समझ को आत्मा के अधिकार के ऊपर उठाते हैं।

- समर्पित व्याख्याकार : आत्मा की अधिकारिक प्रेरणा को स्वीकार करते हुए अपेक्षा और अनुमान लगाते हैं कि यह सत्य और अपने आप में सामंजस्यपूर्ण है, यहाँ तक तब भी जब वे इसकी विश्वसनीयता को प्रदर्शित या प्रमाणित नहीं कर पाते हैं।

2. मानवीय तरीके (20:24)

परमेश्वर ने पवित्रशास्त्र को मानवीय लेखकों के तरीकों को उपयोग करके रचा

पवित्र शास्त्र विभिन्न लोगों के द्वारा लिखा गया था, और यह मानवीय लेखक होने की विविधता को प्रतिबिम्बित करता है।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

ख. प्रबोधन (23:17)

एक मानवीय प्राणी को पवित्रशास्त्र की उचित समझ को सूचित करने के लिए पवित्र आत्मा का कार्य करता है।

उसके प्रबोधन के द्वारा, पवित्र आत्मा हमें उसके वचन के ज्ञान को प्रदान करता है।

III. मानवीय प्रयासों की आवश्यकता (28:20)

क. **महत्व (28:32)**

सही-अर्थ निकालने वाले मसीह के अनुयायी अक्सर जब बाइबल का अध्ययन करने के लिए तैयारी करते हैं, तो हर उस बात को कम कर देते हैं जो कि मानवीय प्रयासों के जैसा दिखाई देता है।

पवित्र आत्मा सामान्य तौर पर हमें उन प्रयासों के माध्यम से प्रबोधित करता है जिन्हें हम तैयारी में लगाते हैं।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

ख. प्रभाव (33:58)

1. श्रुतिभाव्य अर्थ निरूपण (35:03)

परिभाषा : बाइबल के मूलपाठ से अर्थ को निकालना।

पवित्रशास्त्र की टीका हमें बाइबल की व्याख्या और इसके आगे के अध्ययन के लिए तैयार करता है।

2. परस्पर व्यवहार (36:39)

अन्य लोगों ने पवित्र आत्मा से महान् वरदानों और आत्मबोध को प्राप्त किया था जो हमारी पवित्रशास्त्र की व्याख्या करने में सहायता कर सकता है।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

पवित्रशास्त्र के बारे में हमारी सारी व्याख्याएँ अन्य लोगों के द्वारा गहन रूप से प्रभावित होना चाहिए और होती है।

3. अनुभव (38:28)

मसीही जीवन यापन करने के व्यक्तिगत् पहलू पवित्रशास्त्र की हमारी व्याख्याओं में विभिन्न तरीकों से योगदान देते हैं।

प्रत्येक व्यक्ति की भिन्न व्यक्तिगत् बातें पवित्रशास्त्र की व्याख्या करने और इसे जीवन में लागू करने को प्रभावित करती हैं।

IV. सारांश (42:23)

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

पुनर्विचार हेतु प्रश्न

1. प्रेरणा का धर्मसिद्धान्त क्या है?

2. जैविक प्रेरणा के दो महत्वपूर्ण पहलूओं का विवरण दें।

© 2013 थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ के द्वारा
www.thirdmill.org

3. प्रबोधन का धर्मसिद्धान्त क्या है?

4. जब पवित्रशास्त्र की व्याख्या की तैयारी की जाती है तब मानवीय प्रयास करना क्यों महत्वपूर्ण हैं ?

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

5. जब हम पवित्रशास्त्र की व्याख्या की तैयारी करते हैं तब हमारे प्रयासों के ऊपर पड़ने वाले तीन मुख्य प्रभावों का विवरण दें?

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

लागू करने हेतु प्रश्न

1. जब आप पवित्रशास्त्र का अनुवाद करते हैं तब आप कैसे पवित्रआत्मा पर निर्भरता का अभ्यास करते हैं?

2. कैसे प्रेरणा का धर्मसिद्धान्त उस तरीके को प्रभावित करता है जिसमें आप बाइबल का पठन् और इसकी व्याख्या करते हैं?

3. आप कैसे अपनी समकालीन परिस्थितियों के मध्य में भी पवित्र आत्मा के सम्पर्क में बने हुए हैं?

4. किस तरह की सांत्वना और उत्साह आप इस सच्चाई से प्राप्त कर सकते हैं कि परमेश्वर ने मानवीय लेखकों के द्वारा पवित्रशास्त्र का संकलन किया ?

5. बाइबल को समझने के लिए आपके मन को खोलने के लिए और पवित्रआत्मा का आपके साथ खड़े होने से किस तरह की आशीषों को आपने प्राप्त किया है?

6. पवित्रशास्त्र की व्याख्या की तैयारी के लिए आप किस तरह के कार्य को करते हैं ?

7. आपके समकालीन प्रभाव के क्षेत्र में आप कैसे पवित्र आत्मा पर निर्भर होने की महत्वपूर्णता को प्रदर्शित कर रहे हैं?

8. पवित्रशास्त्र के एक टीकाकार होने से आपको किस तरह का लाभ प्राप्त हुए हैं ?

9. अन्य लोगों के साथ परस्पर वार्तालाप ने बाइबल के प्रति आपकी समझ को किस तरह प्रभावित किया है?

10. पवित्रशास्त्र की व्याख्या में किस तरह से अतीत के अनुभवों ने आपकी क्षमता को प्रभावित किया है?

11. पवित्रशास्त्र की व्याख्या में किस तरह से आपकी समकालीन परिस्थितियाँ आपके प्रयासों को प्रभावित कर रही हैं?

12. इस अध्याय से कौन सी सबसे महत्वपूर्ण बात को आपने सीखा है?

© 2013 थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ के द्वारा
www.thirdmill.org